Date __/__/____ Page No.: ____

उदारवादी युग में कॉंग्रेस द्वारा आयोजित विभिन्न अधिवेशन :-

सन् 1885 से 1905 तक के उदारवादी युग में कॉंग्रेसी नेताओं द्वारा विभिन्न समयों पर अलग-अलग स्थानों पर विभिन्न व्यक्तियों की अध्यक्षता में इक्कीस (21) अधिवेशन आयोजित किया गया। प्रत्येक अधिवेशन में कुछ न कुछ मॉंगे ब्रिटिश सरकार के पास भेजी जाती थी। जिसकी भाषा अत्यंत संयत और विनम्र थी। जिसका विवरण निम्नानुसार है :-

(i) विधान परिषदो का विस्तार किया जाए तथा इसके लिए निर्वाचन की प्रणाली अपनाई जाए।
(ii) जूरी प्रथा को देश के अन्य भागो में भी लागू किया जाये।
(iii) कार्यकारिणी और न्यायपालिका एक-दूसरे से स्वतन्त्र होनी चाहिए।
(iv) भारतीय परिषद को समाप्त किया जाये।
(v) सेना पर व्यय कम किया जाये। भारतवासियों को सैनिक शिक्षा दी जाए व सरकार सैनिक शिक्षा के लिए विद्यालय खोले।
(vi) भारतीयों के हितों की विदेशों में रक्षा की जाये
(vii) भारतीय असैनिक सेवा (आई० सी० एस०) की परीक्षाएं भारत एवं इंग्लैण्ड में साथ-साथ आयोजित की जाये एवं उनमें भाग लेने के लिए अधिकतम आयु रखी जाये।
(viii) भूमि कर में कमी की जाये।
(ix) नमक कर कम की जाये।
(x) भारतीयों को उच्च पदो पर नियुक्त किया जाये।
(xi) शस्त्र कानून में संशोधन हो।
(xii) बेगार प्रथा का अन्त हो।
(xiii) कृषि बैंक खोले जायें जिससे गरीब जनता को ऋण मिल सके। सरकार को कृषि व्यवस्था में सुधार करना चाहिए।

Date __/__/____ Page No.: _____

उदारवादियों की प्रमुख नीतियाँ या विचारधारा :-

उदार राष्ट्रीयता के इस काल में कांग्रेसी नेता क्रमशः सुधार की नीति में विश्वास करते थे। उदारवादी नेता उच्च घरानों के थे। उन्होंने सम्पूर्ण देश के हित में ही अपना हित समझा। सन् 1885 से 1905 तक के काल में भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन पर उदारवादियों का प्रभाव और नियन्त्रण बना रहा। इन उदारवादियों की विचारधारा या नीतियों का अध्ययन निम्नलिखित रूपों में किया जाता सकता है—

(1) ब्रिटिश शासन के प्रति निष्ठा -
(2) अंग्रेजों की न्यायप्रियता में विश्वास -
(3) ब्रिटेन के साथ
(4) पाश्चात्य सभ्यता तथा संस्थाओं में अटूट विश्वास.
(5) क्रमिक सुधारों में विश्वास -
(6) ब्रिटिश शासन के अधीन राजनीतिक स्वशासन का लक्ष्य -
(7) ~~शान्तिपूर्ण तथा संवैधानिक साधनों में विश्वास~~

उदारवादियों की कार्य-प्रणाली -

उदारवादी नेता अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए संवैधानिक साधनों में पूर्ण विश्वास रखते थे। वे सरकार से किसी भी कीमत पर लड़ने को तैयार नहीं थे। वे हिंसा और संघर्ष के विरोधी थे। उन्होंने अपनी माँगों को पूरा करने के लिए संवैधानिक साधनों का मार्ग अपनाया। (1) प्रार्थना-पत्र (2) स्मृति-पत्र (3) प्रतिनिधि मण्डल
दूसरे शब्दों में उदारवादियों के प्रमुख साधन निम्नलिखित हैं—

(1) शान्तिपूर्ण तथा संवैधानिक साधनों में विश्वास।
(2) प्रार्थना-पत्र तथा प्रतिनिधिमण्डल भेजने का तरीका।
(3) राजनीतिक याचना एवं स्मृति-पत्र।
(4) क्रमिक परिवर्तन में विश्वास।

Chitra "No religion has mandated killing others as a requirement for its sustenance or promotion." –Dr.A.P.J.Abdul Kalam

(5) नैतिक और राजनीतिक दबाव डालना -

उदारवादियों की असफलताएँ -

सन् 1885 से 1905 तक जिन उदार वादियों के हाथ में काँग्रेस का नेतृत्व रहा, उनकी अनेक आधारों पर आलोचना की जाती है। आलोचकों के अनुसार उदारवादियों की न तो राजनीतिक विचारधारा सही थी और न उनके साधन प्रभावकारी थे। उदारवादियों की असफलताओं या भूलों के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं -

(1) ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति गलत धारणा -
(2) पाश्चात्य ढंग से प्रभावित -
(3) जन-सम्पर्क का अभाव -
(4) साधनों की दुर्बलता -
(5) स्वतन्त्र भारत के दृष्टिकोण का अभाव -

उदार वादियों की सफलताएँ -

यद्यपि उदारवादियों को अपने उद्देश्य में पूर्ण सफलता नहीं मिली परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि सन् 1885 से 1905 तक उदार राष्ट्रीयता का काल निरर्थक रहा। उदारवादीयों के कार्यों के महत्व का अध्ययन निम्न रूपों में किया जा सकता है -

(1) सन् 1892 में भारतीय परिषद् अधिनियम -
(2) राजनीतिक शिक्षा -
(3) राष्ट्रीय जागरण का शुभारम्भ -
(4) स्वतन्त्रता संग्राम के आधार का निर्माण -
(5) ब्रिटिश शासन के दोष स्पष्ट करना -

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया